पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.11.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये



॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

वर्ष-43 अंक-11 मार्गशीर्ष-2083 दयानन्दाब्द 202 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.11.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

महर्षि दयानन्द को बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की

राष्ट्रवादी शक्तियां एकत्रित हो –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चले –गवेन्द्र शास्त्री





नई दिल्ली सोमवार 09 नवम्बर 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 143वे महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर विशाल कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज, जे ब्लॉक, राजौरी गार्डन नई दिल्ली में किया गया। दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से भारी संख्या में लोग सम्मिलित हुए और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य मोहन शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है। राष्ट्रवादी शक्तियां एकत्रित हों तभी देश विरोधी शक्तियों का मुकाबला किया जा सकता है। भारत तेरे टुकड़े कहने वालों के लिए भारत में कोई जगह नहीं है भारत सरकार को चाहिए कि देश विरोधी ताकतों को सख्ती से कुचल दे उन्होंने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का रहा। महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया और लोगों के सोचने व समझने की दिशा ही बदल डाली। उन्होंने पाखंड अंधविश्वास पर सीधा प्रहार किया वह एक निर्भीक सन्यासी थे।आर्य समाज रूपी संस्था की स्थापना करके समाज के चौकीदार का काम किया। वैदिक विद्वान गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं आवश्कता उन पर चलने की है।स्वामी जी को वेदों वाला कहा जाता है उन्होंने लुप्त हुए वेदों को जर्मनी से मंगाकर उन्हें पुनर्स्थापित किया। गायक कलाकार गौरव आर्य, नरेंद्र आर्य सुमन,पिंकी आर्या, सुदेश आर्या आदि ने मधुर गीतों से उल्लासपूर्ण वातावरण बना दिया।मंच संचालक दुर्गेश आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।इस अवसर पर हरि देव आर्य कि पुस्तक ष्राष्ट्रपितामह महर्षि दयानन्द व श्रद्धानंद उवाच का विमोचन हुआ। समाज के प्रधान ओमप्रकाश अरोड़ा व मंत्री अनिल कवर ने सभी का धन्यवाद किया। प्रमुख रूप से प्रवीण आर्य, सुभाष शर्मा, डॉ प्रमोद सक्सेना, यशोवीर आर्य धर्म पाल आर्य, यशपाल आर्य, राम कुमार आर्य, अरुण आर्य, सौरभ गुप्ता, सुनीता वीरेश बुगा,करुणा तिलक चांदना, सुषमा अनिल कँवर, डिम्पल भण्डारी, विनय सुरेखा चोपडा,आरती खुराना, वेद प्रकाश आर्य उपस्थित थे। आर्य महिला रत्न अवार्ड से 15 कर्मठ महिलाओं को सम्मानित किया गया।





पं. लेखराम की ऋषि दयानन्द से भेंट

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

पंडित लेखराम जी स्वामी दयानन्द जी के प्रारम्भ के प्रमुख शिष्यों में से एक रहे जो वैदिक धर्म की रक्षा और प्रचार के अपने कार्यों के कारण इतिहास में अमर हैं। उन्होंने 17 मई, सन् 1881 को अजमेर में ऋषि दयानन्द से भेंट की थी और उनसे अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया था। ऋषि दयानन्द से अपनी भेंट का वृतान्त उन्होंने अपने शब्दों में ही वर्णन किया है। उनके अनुसार 11 मई सन् 1881 को 'संवाददाता' (पं. लेखराम) पेशावर से स्वामीजी के दर्शनों के निमित्त चलकर 16 मई, 1881 की रात को अजमेर पहुंचा और स्टेशन के समीप वाली सराय में डेरा किया और 17 मई को प्रातःकाल सेठ जी के बागीचे में जाकर स्वामी जी का दर्शन प्राप्त किया। उनके (स्वामी दयानन्द जी के) दर्शन से मार्ग के समस्त कष्टों को भूल गया और उनके सत्योपदेशों से समस्त गुत्थियां सुलझ गईं। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने मुझ (पं. लेखराम जी) से प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्म भी, दो व्यापक (सत्तायें) किस प्रकार इकट्ठे (आत्मा के भीतर परमात्मा) रह सकते हैं? मुझसे इसका कुछ उत्तर न बन पाया। मैंने यही प्रश्न स्वामीजी से पूछा। उन्होंने एक पत्थर उठाकर कहा कि इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर कहा कि मिट्टी? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा कि जल? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा कि आकाश और वायु? मैंने कहा कि व्यापक हैं। फिर पूछा कि परमात्मा? मैंने कहा कि वह भी व्यापक है। (स्वामी जी न मुझसे) कहा कि देखो, कितनी चीजें हैं परन्तु सभी उसमें (पथर में) व्यापक हैं। वास्तव में बात यही है कि जो (सत्ता) जिससे सूक्ष्म होती है वह उसमें (दूसरे किंचित स्थूल पदार्थ में) व्यापक हो सकती है। ब्रह्म चूंकि सबसे व अति सूक्ष्म है इसलिए वह सर्वव्यापक है। इससे मेरी शान्ति हो गई।

मुझसे उन्होंने कहा कि और जो तुम्हारे मन में सन्देह हों सब निवारण कर लो। मैंने बहुत सोच–विचार कर 10 प्रश्न लिखे जिनमें से तीन मुझे स्मरण हैं, शेष भूल गये।

प्रश्न–जीव–ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइए? उत्तर–यजुर्वेद का 40 वां अध्याय सारा जीव–ब्रह्म का भेद बतलाता है। प्रश्न–अन्य मत के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं। उत्तर–अवश्य शुद्ध करना चाहिए। प्रश्न–विद्युत क्या वस्तु है और किस प्रकार उत्पन्न होती है? विद्युत सर्वत्र है और रगड़ से उत्पन्न होती है। बादलों की विद्युत् बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है। मुझसे कहा कि 25 वर्ष से पूर्व विवाह न करना। कई ईसाई और जैनी (स्वामी दयानन्द से) प्रश्न करने आते थे, परन्तु शीघ्र निरुत्तर हो जाते थे।

एक हिन्दू नवयुवक–जिसके विचार पूर्णतया ईसाई मत की ओर झुके हुए थे––प्रतिदिन र्प्रश्न करने आता और शान्त होकर जाता था। अन्त में वह पूरी शान्ति पाने के पश्चात् ईसाई मत से विरक्त होकर वैदिक धर्मानुयायी हो गया। व्याख्यानों में सैकड़ों मनुष्य आते और लाभ उठाते जाते थे। 24 मई सन् 1881 को दोपहर के समय महाराज जी से विदा होने पर मैंने निवेदन किया कि आप मुझे अपना कोई चिन्ह प्रदान करें। (स्वामी जी ने मुझे) चिन्ह–स्वरुप अष्टाध्यायी की एक प्रति प्रदान की जो अभी तक पेशावर समाज में विद्यमान है। तत्पश्चात् उनके चरणों को हाथ लगाकर नमस्ते करके दास (पं. लेखराम) वहां से विदा होकर चला आया। पंडित लेखराम जी ने पहली बात यह बताई है कि उन्हें पेशावर से अजमेर पहुंचने में पांच दिन का समय लगा। इस यात्रा से उन्हें थकान हुई परन्तु वह 17 मई, 1881 को स्वामी दयानन्द जी के दर्शन से दूर हो गई। इन पंक्तियों के लेखक को लगता है कि पं. लेखराम जी ने स्वामी जी के व्यक्तित्व व उनकी विद्या के बारे में लोगों से अनेक प्रकार की बातें सुनी होगीं जिससे उन्हें स्वामी जी में उन गुणों की अपेक्षा रही होगी। स्वामी जी के दर्शन और वार्तालाप कर उन्हें उनके बारे में सुनी व समझी पूर्व की सभी बातें सत्य सिद्ध तो हुई ही, अपितु स्वामी जी का श्रेष्ठ व्यवहार देखकर वह उनसे अत्यन्त प्रभावित हुए। ऐसे में थकान का दूर होना स्वाभाविक ही था क्योंकि इस भेंट से उनका मन व हृदय प्रसन्नता से भर गया था। यदि स्वामी दयानन्द उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप न होते तो फिर उन्हें अवश्य ग्लानि व क्षोभ हो सकता था जिससे उनकी यात्रा की थकान समाप्त होने के स्थान पर अधिक हो सकती थी। दूसरी महत्वपूर्ण बात जयपुर के बंगाली सज्जन के ईश्वर के व्यापक होने विषयक प्रश्न से सम्बन्ध रखती है। स्वामी जी ने पंडित लेखराम को उनके सभी प्रश्नों व शंकाओं को प्रस्तुत करने व उनका समाधान करवा लेने को कहा था। जयपुर के बंगाली सज्जन ने ऋषि दयानन्द जी से जो प्रश्न किये थे, हमें लगता है कि उनका जो उत्तर महर्षि दयानन्द जी ने दिया होगा, वह उस समय के अन्य किसी मताचार्य वा धर्माचार्य से मिलना असम्भव था। इससे पं. लेखराम जी की आशंकायें दूर हुई थी। यदि किसी कारण स्वामी दयानन्द जी उन्हें न मिलते और उनके इस प्रश्न का समाधान न होता तो पं. लेखराम जी का भावी जीवन इस प्रश्न का समाधान न मिलने से वह न होता जो ऋषि से इसका समाधान प्राप्त करने पर निर्मित हुआ। हो सकता है कि वह लम्बे समय तक इस प्रश्न के उत्तर पर विचार करते और समाधान न हो पाता। ऐसी स्थिति में हो सकता था कि ईश्वर के वैदिक स्वरुप पर उनका विश्वास स्थिर न रह पाता। अतः महर्षि दयानन्द के दर्शन कर और अपने प्रश्नों का समाधान पाकर पंडित लेखराम जी की वैदिक धर्म में श्रद्धा व निष्ठा में अपूर्व वृद्धि हुई थी, ऐसा हम अनुमान करते हैं। इस घटना से वैदिक धर्म व देश को बहुत लाभ हुआ।

स्वामी दयानन्द जी द्वारा पंडित लेखराम जी का जीव–ब्रह्म की एकता पर किया गया प्रश्न व उसका समाधान भी महत्वपूर्ण है। ऋषि दयानन्द के अनुसार यजुर्वेद का चालीसवां पूरा अध्याय जीव व ब्रह्म का भेद बताता है। हमें लगता है कि ईश्वर की व्यापकता और जीव–ब्रह्म की एकता विषयक ऋषि दयानन्द जी द्वारा दिए उत्तर स्वामी दयानन्द को वेदों का अपूर्व विद्वान होने सहित ऋषि भी सिद्ध करते हैं। इन प्रश्नों के इस प्रकार के समाधान देने वाले धार्मिक विद्वान व नेता उन दिनों देश में कहीं नहीं थे। पं. लेखराम जी का अगला प्रश्न था कि क्या दूसरे मत के लोगों को शुद्ध करना चाहिये अथवा नहीं? इसका निर्णायक दो टूक उत्तर देकर महर्षि दयानन्द ने देश हित का ऐसा कार्य किया जिससे हमारा देश, वैदिक धर्म और संस्कृति बची हुई है। हम सभी जानते हैं कि वैदिक धर्म का अशुद्ध व विकारयुक्त स्वरुप सनातन पौराणिक मत है, इस मत के विद्वान इस प्रश्न पर हमेशा नकारात्मक और देशहित के विपरीत बातें किया करते थे। महाभारत काल के बाद स्वामी दयानन्द ऐसे पहले वैदिक धर्मी विद्वान हुए जिन्होंने शुद्धि का न केवल पूर्ण समर्थन किया अपितु देहरादून में एक मुस्लिम बन्धु मोहम्मद उमर को उसके पूरे परिवार सहित उसकी इच्छा से वैदिक धर्मी बनाया था। महाभारत के बाद इतिहास की यह अपूर्व घटना है। हम समझते हैं कि इस प्रश्न की महत्ता व इसके ऋषि दयानन्द के शास्त्रसम्मत उत्तर के कारण भी पंडित लेखराम जी की ऋषि दयानन्द से यह भेंट ऐतिहासिक महत्व की थी। पं. लेखराम जी ने एक प्रश्न विद्युत की उत्पत्ति व अस्तित्व पर किया जिसका ऋषि दयानन्द द्वारा दिया गया उत्तर उनकी गम्भीर वैज्ञानिक सोच को प्रस्तुत करता है। ऋषि दयानन्द जी ने जो उत्तर दिया है वह उनके समय के किसी अन्य धार्मिक प्रवृत्ति के विद्वान से मिलना सम्भव नही दीखता। स्वामी जी के समय के सभी धार्मिक विद्वान मूर्तिपूजा और धार्मिक अन्धविश्वासों से ग्रस्त थे। उनकी विद्या व विज्ञान की उन्नति में कोई रुचि नहीं थी, अतः उनसे ऐसा उत्तर नहीं मिल सकता था।

पंडित लेखराम जी ने ईसाई मत से प्रभावित एक हिन्दू युवक की चर्चा कर बताया है कि वह ऋषि दयानन्द के समाधानों से सन्तुष्ट होकर वैदिक धर्मी हो गया था। देहरादून में भी ऐसी ही घटना घटी थी और परिणाम भी इस घटना के अनुसार ही हुआ था। इससे हम अनुमान करते है कि ऋषि दयानन्द के वैदिक धर्म के प्रचार से अनेक लोग विधर्मी होने से बचे जिससे वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा हुई है। अन्य मतों के अनेक लोगों द्वारा भी वैदिक मत अपनाया गया जिससे वैदिक धर्म की महत्ता सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द और पंडित लेखराम जी की इस भेंट से ज्ञात होता है कि धर्म के गहन–गम्भीर ज्ञान सहित ऋषि की विज्ञान के विषयों में भी अच्छी गति थी। लगता है कि स्वामी जी से इस भेंट की घटना से पंडित लेखराम जी के वैदिक धर्म व इसके सिद्धान्तों पर विश्वास में और अधिक वृद्धि हुई होगी जिसका परिणाम उनके बाद के जीवन को देखकर अनुमान किया जा सकता है। पंडित जी ने वैदिक धर्म के प्रचार के साथ अनेक लोगों को धर्मान्तरित होने से बचाया जिसका अनुकूल प्रभाव भविष्य में होने वाले धर्मान्तरणों पर भी पड़ा। उन्होंने महर्षि दयानन्द का एक विशाल एवं खोजपूर्ण जीवन चरित देकर स्वयं को अमर कर दिया है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त भी आपने विपुल साहित्य का निर्माण किया है। पंडित लेखराम ऋषि दयानन्द के मिशन एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अपना जीवन बलिदान करने वाले पहले धर्म योद्धा कहे जा सकते हैं। यदि उनका जीवन लम्बा होता तो वह वैदिक धर्म की और अधिक सेवा करते। उनका आदर्श जीवन युगों युगों तक लोगों को देश और धर्म पर अपना सर्वस्व अर्पित करने की प्रेरणा देता रहेगा। इति। पं. लेखराम जी का बलिदान 6 मार्च सन् 1897 को लाहौर मे हुआ था। ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों और विचारधारा का प्रचार करने वाले प्रमुख शिष्य तथा पं. लेखराम जी के मित्र स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पं. लेखराम जी का जीवन चरित्र लिखा है। पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने भी 'रक्त साक्षी पं. लेखराम' नाम से जीवनचरित्र लिखा है। अन्य भी छोटे आकार के पं. लेखराम जी के जीवन चरित्र उपलब्ध हैं। पं. लेखराम जी के प्रायः सभी ग्रन्थों को 'कुलयात आर्य मुसाफिर ग्रन्थ' ग्रन्थ में संग्रहित कर प्रकाशित किया गया है। सभी बन्धुओं को इन ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये। पं. लेखराम जी की पावन स्मृति को हमारा सादर नमन।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, मो. 09412985121

राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर भव्य आयोजन

विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं अनिल आर्य –स्वामी आर्य वेश



शनिवार 14 नवंबर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर मुख्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती पुरानी सब्ज़ी मंडी दिल्ली में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता ओम सपरा ने की व यज्ञ ब्रह्मा आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया पिंकी आर्य के मधुर भजन हुए। स्वामी आदित्य वेश वीरेन्द्र आहूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अरुण आर्य ने किया प्रमुख रूप से कुंवर पाल शास्त्री रामचंद्र सिंह माधव सिंह आर्य, विजय सपरा नेत्र पाल आर्य यज्ञ वीर चौहान वेदप्रकाश आर्य संजय आर्य आस्था आर्य सीमा ढींगरा गोपाल आर्य सुदेश भगत देवेन्द्र गुप्ता आदि उपस्थित थे।

आर्य समाज नन्दग्राम का वार्षिकोत्सव भव्य एवं सात्विक वातावरण में सम्पन्न

महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

ऋषि से प्रेरित होकर अनेक नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े –आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री



रविवार, 1 नवम्बर 2026, आर्य समाज नन्दग्राम का वार्षिकोत्सव रविवार को शान्ति फार्म हाउस में अत्यन्त भव्य एवं सात्विक वातावरण में सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर.के. आर्य (निदेशक, स्वदेशी आयुर्वेद, हरिद्वार) ने की। युग–प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस तथा स्वर्गीय प्रेमपाल सिंह आर्य (पूर्व प्रधान, नन्दग्राम) की पुण्यतिथि के पावन अवसर पर आचार्य रामेश्वर शास्त्री के ब्रह्मत्व में भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य यज्ञमानों के रूप में सर्वश्री रमेश स्वामी, रूपेश आर्य एवं दीपेश आर्य सपत्नीक उपस्थित रहे। वेदपाठ कुमारी प्रियंका आर्या ने किया। बिजनौर से पधारे सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक नरेश दत्त मुनि तथा प्रवीण आर्य, नरेश प्रसाद एवं दीना नाथ नागिया के ईश–भक्ति एवं महर्षि दयानन्द के गुणगान से ओत–प्रोत भजनों ने श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे।उनका प्रभाव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में आज भी स्पष्ट दिखाई देता है।उन्होंने नारी–उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए कृ यज्ञ करने तथा वेद पढ़ने का अधिकार महिलाओं को प्रदान किया, बाल–विवाह का विरोध किया तथा विधवा–विवाह का समर्थन किया।उन्होंने वैचारिक क्रांति का शंखनाद कर लोगों की सोचने की दिशा ही बदल दी।आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वामी जी के आदर्शों पर चलें। मुख्य वक्ता आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने ऋषि–निर्वाण दिवस पर बोलते हुए कहा कि वेद से जुड़ा व्यक्ति मातृभक्त, पितृभक्त और देशभक्त होता है।महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट कहा था –"कोई कितना ही करे, परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि है।" स्वामी जी से प्रेरणा लेकर अनेक युवा देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया तथा पाखंड, अंधविश्वास और कुरीतियों पर निर्भीक प्रहार किया।वे सचमुच एक निर्भीक संन्यासी थे। अध्यक्ष डॉ. आर.के. आर्य ने सुंदर एवं सफल आयोजन के लिए आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए स्वर्गीय पूर्व प्रधान प्रेमपाल सिंह आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने आर्यजनों से आह्वान किया कि गाजियाबाद में पार्कों एवं चौराहों के नाम स्वामी दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द के नाम पर विशेष अभियान चलाकर रखवाए जाएं। इस अवसर पर डॉ. प्रतिभा सिंघल,श्रद्धानन्द शर्मा, विजयपाल कसाना,सत्यवीर चौधरी,पार्षद वीरेन्द्र त्यागी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से वीरेन्द्र नाथ सरधाना, के.के. यादव,महिपाल सिंह तोमर, सेवा राम त्यागी,वेद व्यास, अरुण आर्य,सुरेश आर्य, वेद प्रकाश तोमर,बीरबल मास्टर, सरोज सिंह आर्या, सुरेश प्रसाद आर्य, सुभाष शर्मा, मंगल सिंह चौधरी, वीर मोहन अहलावत तथा डॉ. प्रमोद सक्सेना आदि उपस्थित रहे। मंच का कुशल संचालन सौरभ गुप्ता एवं पायल गर्ग ने किया। योगाचार्य सौरभ गुप्ता के नेतृत्व में आर्य युवकों का व्यायाम प्रदर्शन कार्यक्रम का आकर्षण का केंद्र रहा। मंत्री रमेश कुमार आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। शांतिपाठ एवं ऋषिलंगर के साथ यह पावन समारोह सम्पन्न हुआ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 811वां वेबिनार सम्पन्न

भगवान कौन? विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

६ भग जिस भी मानव में हो उन्हें हम भगवान कह सकते हैं–आर्य रविदेव गुप्त

सोमवार 9 नवम्बर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'भगवान कौन?' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 810 वाँ वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता आर्य रवि देव गुप्त ने बताया कि भगवान शब्द ईश्वर के लिये ही प्रयुक्त होता है और हमारे पौराणिक बंधु श्रीराम व श्रीकृष्ण को भी भगवान का अवतार मानकर, उन्हें भगवान कहते हैं। वेदों के अनुसार 'भग' शब्द का अर्थ होता है ऐश्वर्य, सम्पन्नता, कीर्ति आदि। विष्णु पुराण भी छः प्रकार के भगों का निर्देश करता है ओर जिस भी महापुरुष में यह सभी भग होते हैं, उन्हें भगवान संज्ञा से विभूषित कर सकते हैं। इसका अर्थ है कि न्यूनतम ६ भग– समस्त ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य, जिस भी मानव में हो उन्हें हम भगवान कह सकते हैं। परमात्मा तो अनंत भगों का स्वामी होने से भगवान है ही।हम भी परमेश्वर से अर्चना करते हैंरू ष वयं भगवंतरू स्यामां। मुख्य अतिथि डॉ गज राजसिंह आर्य व अध्यक्ष राजेश मेहन्दीरता ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया व धन्यवाद ज्ञापन प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने किया। गायिका शोभा अरोड़ा, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, पिंकी आर्या, रवीन्द्र गुप्ता आदि के मधुर भजन हुए।

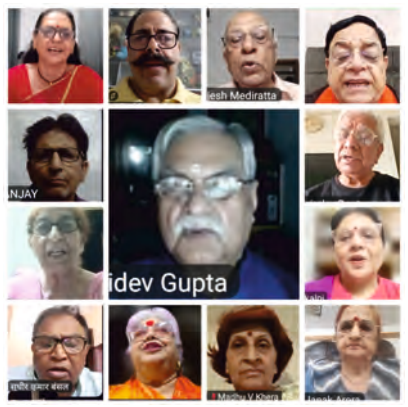

वीर पर्व विजय दशमी पर गोष्ठी सम्पन्न

अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश,आत्मसुधार और नारी– सम्मान का संकल्प–श्रुति सेतिया

सरदार पटेल अद्भूत संगठन कर्ता थे– अनिल आर्य

शनिवार 31 अक्तूबर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में विजय दशमी वीर पर्व के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया।यह कोरोना काल से 809 वाँ वेबीनार था। योगाचार्या एवं प्राकृतिक चिकित्सक श्रुति विजय सेतिया ने अपने उद्बोधन में विजय दशमी के सांस्कृतिक,नैतिक और सामाजिक महत्त्व पर गहरी दृष्टि डाली।उन्होंने भगवान राम की विजय को मात्र एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि अधर्म पर धर्म,अन्याय पर न्याय और अहंकार पर सदाचार की शाश्वत विजय के रूप में प्रस्तुत किया।उन्होंने स्पष्ट किया कि विजय दशमी का संदेश केवल रावण के पुतले के दहन तक सीमित नहीं रहना चाहिए। हमें अपने भीतर विद्यमान अहंकार, क्रोध,लोभ और अन्य बुराइयों को भी जलाकर राख करने का संकल्प लेना चाहिए।वास्तविक विजय तभी सार्थक होती है,जब हमारे आचरण में सत्य, संयम और सदाचार स्पष्ट रूप से दिखाई दें।नारी शक्ति के संदर्भ में उन्होंने माँ दुर्गा के स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा कि नारी शक्ति,साहस, सृजन और संरक्षण की जीवंत प्रतीक है।नारी का सम्मान केवल शब्दों या उत्सवों तक सीमित न रहकर परिवार, समाज और कार्यस्थल पर उसके अधिकारों,सुरक्षा और गरिमा के रूप में प्रतिबिंबित होना चाहिए।जिस समाज में नारी का सच्चा सम्मान होता है,वही समाज सशक्त और संस्कारित बनता है।पर्यावरण संरक्षण पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि पर्वों को मनाते समय प्रकृति और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं भूलनी चाहिए।प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों से बचते हुए स्वच्छ, पर्यावरण–अनुकूल और जागरूक तरीके से त्योहार मनाना आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।अपने संदेश में उन्होंने आह्वान किया कि विजय दशमी को केवल एक उत्सव नहीं,बल्कि आत्मसुधार,नारी सम्मान, सामाजिक सद्भाव और पर्यावरण संरक्षण के संकल्प–पर्व के रूप में मनाया जाए।जब व्यक्ति अपने भीतर की बुराइयों पर विजय प्राप्त करेगा, तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होगा।सच्ची विजय वही है,जो व्यक्ति के चरित्र को श्रेष्ठ बनाए, नारी को सम्मान दिलाए और प्रकृति को सुरक्षित रखे। मुख्य अतिथि कृष्णा पाहुजा एवं अध्यक्ष राजश्री यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए सर दार पटेल जयंती पर उन्हें याद करते हुए अद्भूत संघठन कर्ता बताया और श्रद्धांजलि अर्पित की और प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यबाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, रवीन्द्र गुप्ता, संतोष धर, कुसुम भंडारी आदि के भजन हुए।

हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

के तत्वावधान में

स्वामी रामदेव जी की अध्यक्षता में

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

दिनांक 19 एवं 20 दिसंबर 2026

स्थानः गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

हज़ारों की संख्या में पहुचे

निवेदकः स्वामी आर्यवेश व प्रो. विठ्ठल राव आर्य



स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने **दोहरायी अपनी माँग**

– अनिल आर्य



सांसद योगेन्द्र चंदोलिया का अभिनंदन करते
अनिल आर्य व पिंकी आर्य

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970